रियाज़

# आवाज़ों की दुनिया

प्रभात झा

*हम सब आवाज़ों की दुनिया में रहते हैं। हमारे दिन की शुरूआत भी किसी न किसी आवाज़ के साथ होती है। घड़ी का अलार्म, मुर्गे, माँ की या कोई भी आवाज़ हमें जगा देती है। फिर हमारा हर पल कितनी ही आवाज़ों के बीच से गुज़रता है। कुछ आवाज़ों में एक कशिश होती है, जो एकदम से हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं।*

चलो थोड़ा वक्त सुनने का रियाज़ करते हैं:

- किसी जगह दस मिनट चुपचाप बैठकर आवाज़ें सुनते हैं।
- घर की आवाज़ें, बाज़ार की आवाज़ें, स्टेशन की आवाज़ें..... कौन-सी आवाज़ें दिलकश लगती हैं?
- कुछ आवाज़ों से तो दूर भागने का मन करता है।
- कोई ऐसा शख्स है जिसकी आवाज़ सबसे अच्छी लगती है।
- कुछ आवाज़ें उदास करती हैं तो कुछ बेचैन कर देती हैं।
- कुछ आवाज़ों को हम अनसुना करते रहते हैं और कुछ को कान लगाकर सुनने की कोशिश करते हैं।

कोई दिन तो ऐसा भी जाता है जब सबकी बातें सुनना पड़ती हैं? चक मक

## दो जापानी हाइकू

मकड़ी, यह
तुम्हारी आवाज़ है – या
पतझड़ की हवा?

*–बाशो*

सिर्फ एक चहकते
कीड़े ने मुझे बताया कि रात है,
इतना चमक रहा था चाँद।

*–एत्सुजिन्*

चित्र: कनक